तिथि–10 नवम्बर 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२२
युगाब्द-५१२२, अंक-१४४, वर्ष-१४
मार्गशीर्ष विक्रमी २०७८ (नवम्बर 2021)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ –यजुः० ३२।१

व्याख्यान–[(स नः)] वह परमेश्वर हमारा (बन्धुः) दुःखनाशक और सहायक है। तथा (जनिता) सब जगत् तथा हम लोगों का भी पालन करनेवाला पिता, तथा हम लोगों के कामों की सिद्धि का, (विधाता) पूर्ण कामों की सिद्धि करनेवाला वही है। सब जगत् का भी विधाता (रचने और धारण करनेवाला एक परमात्मा ही है, अन्य कोई नहीं।) (धामानि वेद भुवनानि विश्वा) सब धाम अर्थात् अनेक लोक-लोकान्तरों को रचके अनन्त सर्वज्ञता से यथार्थ जानता है। [(यत्र देवा अमृतमानशानाः)] वह कौन परमेश्वर है? कि जिससे 'देव' अर्थात् विद्वान् लोग 'विद्वाꣳसो हि देवाः' शतपथ ब्रा०', अमृत= मरणादि दुःखरहित मोक्षपद में सब दुःखों से छूटके सर्वव्यापी पूर्णानदस्वरूप परमात्मा को प्राप्त होके परमानन्द में सदैव रहते हैं। (तृतीय धामन्) एक स्थूल जगत् (पृथिव्यादि), दूसरा सूक्ष्म=आदिकारण, तीसरा जो सर्वदोषरहित अनन्तानन्दस्वरूप परब्रह्म, उस धाम में (अध्यैरयन्त) धर्मात्मा, विद्वान् लोग स्वच्छन्द= स्वेच्छा से वर्त्तते हैं। सब बाधाओं से छूटके विज्ञानवान् शुद्ध होके देश-काल-वस्तु का परिच्छेदरहित सर्वगत 'धामन्' आधारस्वरूप परमात्मा में सदा रहते हैं। उससे जन्म-मरणादि दुःखसागर में कभी नहीं गिरते ।

सम्पादकीय

पर्यावरण ....?

हमारा शरीर और हमारा संसार पञ्च महाभूतों से बना हुआ है- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश। यही पञ्च तत्त्व हैं, इन्हीं का हमारे चारों ओर आवरण है अर्थात् हम इन्हीं के मध्य में रहते हैं (**अतः परितः आवरणम् पर्यावरणम्**) इसलिए इसे पर्यावरण कहते हैं। वर्त्तमान में दीर्घकाल से यह पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषण से बचने-बचाने के लिए हमारे देश सहित सम्पूर्ण संसार के देश चिंतित हैं और मात्र चिन्तित ही नहीं हैं अपितु प्रदूषण का समाधान खोजने के लिए प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों का व्यय करते हैं। सभी राष्ट्राध्यक्ष-राष्ट्र प्रमुख एवं उनके साथ सहस्रों लोग एकत्र होते हैं। जब से इस पर्यावरण की यह चिन्ता प्रारम्भ हुई तब से विचार मन्थन करते हैं, कुछ समाधान के बिन्दु तय करते हैं, सम्मेलन की अगली तिथि तय करते हैं और अपने-अपने देश लौट जाते हैं। अगले वर्ष जब फिर मिलते हैं, तब तक स्थिति और जटिल हो चुकी होती है। और जब से इसके समाधान के लिए यह सम्मेलन प्रारम्भ हुए, तब से अब तक का व्यय यदि जोड़ लिया जाय तो लगभग इतना तो हो ही चुका होगा जितने में कई नए देश बसाए जा सकते थे। किन्तु तब भी यह **''पर्यावरण प्रदूषण'** है कि सुधरने का नाम ही नहीं ले रहा है। इतना ही नहीं प्रत्येक देश में पर्यावरण प्रदूषण को सुधारने में सहस्रों-सहस्रों स्वयं सेवी लोग एवं संस्थाएं काम कर रही हैं, किन्तु सुधार? प्रश्न बनकर ही रह गया है। ऐसी परिस्थिति में सम्पूर्ण संसार का मार्ग दर्शन करते हुए जिस हमारे देश को इसका समाधान बताना एवं करना चाहिए था, वह स्वयं इस पर्यावरण प्रदूषण से भयंकर रूप से त्रस्त है। देश की राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र वर्ष प्रतिवर्ष एक ऐसे स्थान के रूप में विख्यात होता जा रहा है जहाँ विदेशी विशेषतः विशिष्ठ राष्ट्र प्रमुखादि नवम्बर से लेकर फरवरी तक आना उपयुक्त नहीं समझते, जबकि इसी बीच में राष्ट्र का गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी को पड़ता है जिसमें किसी न किसी राष्ट्र प्रमुख को मुख्य-अतिथि बनाकर बुलाया जाता है और तब हमारे पर्यावरण विशेषज्ञ मीडिया वाले महानुभाव यह बताते नहीं चूकते कि- कितने दिन वह राष्ट्र प्रमुख दिल्ली में रुके और इससे उनकी आयु कितने दिन घट गयी है। किन्तु जो देशवासी देश के भिन्न-भिन्न भागों से आकर यहाँ दो करोड़ से अधिक रह रहे हैं, उनकी आयु की चिन्ता तो बस चिन्ता ही बनकर रह गयी है।

पाठकगणों! आइए विचार कीजिए कि पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण क्या हैं?

शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारणों में से भी जो सबसे मुख्य कारण है और जिसके प्रति अभी तक पर्यावरणवादी गम्भीरता से विचार तक नहीं करते वह सबसे मुख्य कारण है- **'पशु हत्या'** अर्थात् **प्राणि हत्या**। सृष्टि के आरम्भ से लेकर वर्त्तमान तक उपलब्ध साक्ष्य आधारित इतिहास का यदि अध्ययन करते हैं तो जितनी **'प्राणि हत्या'** किसी भी काल में दिखाई नहीं देती, जलचर, नभचर और स्थलचर सभी मिलाकर यदि गणना की जाए तो गणना करना कठिन हो जाएगा। इतने प्राणी प्रतिदिन मनुष्य कहलाने वाले प्राणी के आहार, सौन्दर्य प्रसाधन, औषधी निर्माण आदि के लिए क्रूरता नृशंसता पूर्वक बड़े-बड़े दानवाकार कत्लखानों में तड़पा-तड़पाकरके मारे जाते हैं, इस पकड़ने, मारने से प्रारम्भ होता है यह **'पर्यावरण प्रदूषण'** और जब तक उसके अन्तिम अवशेष पञ्चतत्त्व में विलीन न हो जाएं तब तक प्रदूषण ही प्रदूषण फैलता रहता है, मुख्यत: इन्हीं मांस उद्योगों में बनाए जाते है विषैले से विषैले और अत्यन्त हानिकारक रसायन जो वातावरण में घुल-घुलकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश किसी को भी शुद्ध स्थिति में नहीं रहने देते। विश्व के सभी प्रकार के उद्योगों का यदि सम्पूर्ण अध्ययन किया जाए और जल प्रदूषण के मुख्य कारणों की खोजा जाए तो उसमें सबसे अधिक योगदान मांस उद्योगों का ही मिलेगा। आप सभी जानते हैं कि प्रतिवर्ष दिल्ली और दिल्ली में रहने वाले लोग व दिल्ली की सरकार सभी किसानों के द्वारा पराली जलाने का रोना रोते हुए दिखाई देते हैं। किन्तु दिल्ली के चारों और इन दिल्ली वालों का पैशाचिक पेट भरने के लिए जो निरीह मुर्गा-मुर्गी और अण्डे उत्पादन के लिए बने **'मुर्गी फार्म'** हैं, उनके विषय में कोई भी बात नहीं करता, जबकि एक **'मुर्गीफार्म'** के चारों ओर एक-एक किलोमीटर तक कोई शुद्ध श्वास नहीं ले सकता और जहाँ गांवों के चारों और सभी दिशाओं-उपदिशाओं में **'मुर्गीफार्म'** ही सरकारों के द्वारा खुलवाए गए हों, वहाँ की स्थिति क्या होती है? यह सहज ही कल्पना की जा सकती है। इसके अतिरिक्त सुअर फार्म, मछलियों के कृत्रिम तालाब यह सभी भी आपको अपनी बानगी देते ही हैं, जबकि यह छोटे-छोटे ही प्राणी हैं, फिर जो बड़े-बड़े **'स्लाटर हाउस' (कत्लखाने)** हैं उनकी स्थिति क्या होती होगी? दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रदूषण का कारण है, **'पेट्रो केमिकल'** अर्थात् पेट्रोल, डीजल, मिट्टी का तेल (केरोसिन) एवं विभिन्न प्रकार की गैसें एल.पी.जी., सी.एन.जी., पी.एन.जी. आदि-आदि। इन्हीं से बनता है **'प्लास्टिक'** जो कि- विश्वभर के लिए आत्मघाती साबित हो रहा है, दुनिया जिन पेड़ों की कटाई का रोना प्रमुख रूप से रोती है, वह पेड़ों की कटाई प्राणियों की कटाई से अधिक घातक न होते हुए भी घातक तो है ही।

आर्यों! आर्याओं! एवं आर्यवंशियों (हिन्दुओं!) सर्व प्रथम आवश्यकता है कि पर्यावरण की शुद्धता के लिए ही सही प्राणिवध रुकना चाहिए। इसके बिना रूके **'पर्यावरण प्रदूषण'** रुक नहीं सकता। और प्राणिवध आर्यों को छोड़कर धरती पर दूसरा कोई रोक नहीं सकता। दूसरा पेट्रोलियम पदार्थों का विकल्प खोजा ही जा रहा है, लागू भी होने लगा है, सौर ऊर्जा आदि के रुप में इसे अधिकाधिक अपनाया जाए। तीसरे क्रम पर अधिकाधिक पेड़-पौधे, बाग-बागीचे एवं वन-उपवन बढ़ाए जाएं। और सर्वोपरि है कि हमारे श्रेष्ठ ऋषि-मुनियों की सनातन विद्या **'यज्ञ'** को घर-घर तक स्थापित किया जाय। **यज्ञ** के लिए चाहिए **समिधा** और **समिधा** के लिए **वृक्ष। यज्ञ** के लिए चाहिए **घृत** और **घृत** के लिए **'गाय'** आदि प्राणी। अर्थात् प्राणी मात्र की रक्षा, पालन और यथायोगय उपयोग **'आर्य'** ही कर सकते हैं।

अत: विश्वभर को **'पर्यावरण प्रदूषण'** से आर्य ही बचा सकते हैं। अन्य कोई उपाय नहीं है। अत: आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माणा, आर्य निर्माण-विश्व निर्माण है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् .....

-आचार्य हनुमत् प्रसाद, अध्यक्ष, आर्य महासंघ।

कवितालोक-१

- आर्य अवनीश पंवार वधिक, मु०नगर

बूढ़ी माँ तरसती दवा को
बहन तलाशती दुलार
पत्नी राह देखती प्रियतम की
बेटी सुरक्षा की करे गुहार

पर तुम थमते नही
करने से श्रृंगार
नित नये उपाय ढूंढते
करने को व्यापार

भोग लगाते उन्हें सजाते
करते याचना और प्रार्थना
पर पलटकर एक बार भी
तुमने सुनी कोई आवाज

जानने को सिद्धान्त
कभी न किया यत्न
सीखने को उपासना
न किया कोई प्रयत्न

घंटियाँ बजाते रहे
खुद को बहलाते रहे
कभी काष्ठ की मूरत तो
कभी पत्थर की बनाते रहे

स्वाध्याय किया नही
सच को जिया नही
क्रोध को पिया नही
ज्ञान को लिया नही

अब ढूंढते फिरते हो
उटपटांग उपाय सस्ते
न मंजिल का पता है
न दिखते सही रास्ते

जो दिखाया धूर्तों ने
जो सिखाया कपटियों ने
जो पढाया सत्ताओं ने
जो लिखाया गुलामों ने

आ अब लौट चले
वेद के सच्चे मार्ग पर
आ अब सीख लें सब
लघु गुरुकुल के सत्र कर

कितनी ही तेरी शंकाओं को
मिटा देगा संग विद्वानों का
कितनी ही तेरी पीड़ाओं को
हर लेगा साथ ज्ञानवानों का

लौटेगा नया सा रूप लेकर
अविद्या को तिलांजलि देकर
उपनयन तो धारण करेगा ही
शिखा भी धरने का प्रण लेकर

एक अनूँठा सा ग्रंथ भी मिलेगा
जिसके प्रकाश में सब साफ दिखेगा
ऊँचे शुद्ध नेक लक्ष्य तू चुनेगा
परोपकार की भावना से भरेगा

त्याग देगा तू कितनी ही
गुलामी की निशाँनियो को
याद रखेगा आर्यावर्त की
गौरवमयी कहाँनियों को

फिर से कुछ सपने
साकार करने का मन होगा
फिर से कुछ अपनो के
उद्धार का मन होगा

आर्य निर्माण आर्य संरक्षण
और शक्तिशाली संगठन होगा
चहुँ और जयघोष होगा ऋषियों का
वेद का पाठन और पठन होगा

अनेकों व्रत धारी होंगे
अनेकों ब्रह्मचारी होंगे
अनेकों सदगृहस्थी होकर
बनेंगे संन्यासी वानप्रस्थी होकर

जड़ पूजा का न कहीं भी
कहीं कोई नामोंनिशान होगा
चेतन की ही उपासना होगी
प्राणीमात्र का सम्मान होगा

फिर नौ दिन ही क्यूँ
सदा ही ये विधान होगा
जो दृष्टि कुटिल होगी नारी पर
उसको नरक का भान होगा

सरल लघु मार्ग न खोजो
उस ईश्वर तक जाने के
अष्टांग योग से बेहतर कुछ नही
उस परमसुख को पाने के

आओ वेद पढें
आओ प्रेम करें
आओ सत्य जानें
आओ आर्यकरण करें...

जय आर्य- जय आर्यावर्त!!!

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-२७

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

परमपिता परमेश्वर ने गृहस्थ को सुख निष्पादन के लिए बनाया है, संसार के सुख गृहस्थ के बिना अधूरे हैं अन्ततः गृहस्थ संसार रूपी कामनी का श्रृंगार स्थानी ही है। इसके महत्व के सम्बन्ध में ऋषिवर के यह शब्द उचित ही हैं कि- "जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ती के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम कहाँ से हो सकते? जो कोई गृहाश्रम की निदा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है।" तथापि लोक में वेद प्रतिपादित व्यवहार को त्यागकर अनुचित व्यवहार करने के कारण प्रशंसनीय यह गृहाश्रम डरावना होने लगता है। डर ऐसा हो जाता है कि गृहस्थ के सुख छोटे और अनुचित व्यवहार से उत्पन्न होने वाले दुःख बडे लगने लगते हैं, ये दुःख न डरावें इसी लिए उपरोक्त सारे निर्देश स्वयं ईश्वर व ईश्वर भक्त ऋषियों ने दिये हैं। प्रजापति परमात्मा का दिया यह निर्देश आचरणीय है।

गृहा मा विभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रतऽएमसि।
ऊर्जंविभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः॥

अर्थात् हे गृहस्थ लोगों! तुम विधिपूर्वक गृहाश्रम में प्रवेश करने से मत डरो, मत कम्पायमान होओ। अन्न पराक्रम तथा विद्यादि शुभ गुणों से युक्त होकर गृहाश्रम को धारण करते हुए तुम लोगों को हम सत्योपदेशक विद्वान लोग प्राप्त होते और सत्योपदेश करते हैं और अन्नपानाच्छादन-स्थान से तुम ही हमारा निर्वाह करते हो इसलिए तुम्हारा गृहाश्रम व्यवहार एवं निवास सर्वोत्कृष्ट है। हे वरानने जैसे मै तेरा पति अन्तःकरण से आनन्दित प्रसन्न मन उत्तम बुद्धि से युक्त मुझको, और हे मेरे पूजनीयतम पिता आदि लोगों! तुम्हारे पराक्रम तथा अन्नादि ऐश्वर्य के सब प्रकार से प्राप्त होता हूँ, उसी प्रकार तुम लोग भी मुझसे प्रस्सन्न होके वर्ता करो।

पहले के लेखों में इस पर पर्याप्त विवेचन किया जा चुका है कि किस प्रकार घरों में सम्बन्धों को विद्रूप बना दिया गया है, इतना विद्रूप की लोगों में गृहस्थ को लेकर एक नकारात्मक दृष्टिकोण स्थिर हो गया है। यह भी हमने बारम्बार कहा है कि इसका समाधान केवल ईश्वर प्रदत्त वेद के निर्देशों का ग्रहण करके ही सम्भव है। उसी कडी में यह ज्ञातव्य है कि एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने की आवश्यकता है ताकि गृहाश्रम की निन्दा रुक सके। ऐसे ही दृष्टिकोण के लिए वेद का यह निर्देश है कि हे गृहाश्रमि स्त्री पुरुषों! तुम आनन्दित, प्रसन्न मन और उत्तम बुद्धि से युक्त होकर पूर्वजों के किये हुए पराक्रम व उनके द्वारा उपार्जित ऐश्वर्य को धारण करते हुए एक दूसरे को प्राप्त हुआ करो अर्थात् व्यवहार किया करो। साथ ही यह स्मरण रखो कि जो परापकारी धर्मात्मा विद्वान् सत्योपदेष्टा हैं उनका भोजन पानी, वस्त्र व घर आदि स्थनो से सत्कार किया करो क्योंकि वे ही घरों से व्यवहारिक गडबडियों को निकालने में समर्थ हो सकते हैं। और-

येषामध्येति प्रवसन् येषु सौमनसो बहुः।
गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः॥
उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः।
क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवं शग्मं शंयोः शंयोः॥

अर्थ- हे गृहस्थों! परदेश को गया हुआ मनुष्य जिनका स्मरण करता है जिन गृहस्थों में बहुत प्रीती होती है, उन गृहस्थों की हम विद्वान लोग प्रशंसा करते और प्रीती से समीपस्थ बुलाते हैं। वे गृहस्थ लोग उनको जानने वाले हम लोगों को सुहृद जानें। वैसे तुम गृहस्थ और हम संन्यासी लोग आपस में मिलके पुरुषार्थ से व्यवहार और परमार्थ की उन्नति सदा किया करें।

हे गृहस्थों! अपने घरों में जिस प्रकार गौ आदि उत्तम पशु समीपस्थ हों, बकरी भेड आदि दूध देने वाले पशु समीपस्थ हों इसके अनन्तर अन्नादि पदार्थों के मध्य में उत्तम अन्नादि पदार्थ प्राप्त होंवे, हम लोग वैसा प्रयत्न किया करें। हे गृहस्थों! मैं उपदेशक वा राजा इस गृहाश्रम में तुम्हारे रक्षण तथा निरुपद्रवता करने के लिए प्राप्त होता हूँ। मैं और आप लोग प्रीती से मिल के कल्याण व्यावहारिक सुख और पारमार्थिक सुख को प्राप्त होके अन्य सब लोगों को सदा सुख दिया करें।

क्रमश ....

कार्तिक

21 अक्टूबर-19 नवम्बर 2021 — ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
शुभ दीपावली 4 नवम्बर			अश्विनी कृष्ण प्रतिपदा 21 अक्टूबर	भरणी कृष्ण द्वितीया 22 अक्टूबर	कृतिका कृष्ण तृतीया 23 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण चतुर्थी 24 अक्टूबर
मृगशिरा कृष्ण पंचमी 25 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण पंचमी 26 अक्टूबर	आर्द्रा कृष्ण षष्ठी 27 अक्टूबर	पुनर्वसु कृष्ण सप्तमी 28 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण अष्टमी 29 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण नवमी 30 अक्टूबर	मघा कृष्ण दशमी 31 अक्टूबर
पू० फाल्गुनी कृष्ण एकादशी 1 नवम्बर	उ० फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 2 नवम्बर	हस्त कृष्ण त्रयोदशी/चतुर्दशी 3 नवम्बर	चित्रा/स्वाती कृष्ण अमावस्या 4 नवम्बर	विशाखा शुक्ल प्रतिपदा 5 नवम्बर	अनुराधा शुक्ल द्वितीया 6 नवम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल तृतीया 7 नवम्बर
मूल शुक्ल चतुर्थी 8 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पंचमी 9 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 10 नवम्बर	श्रवण शुक्ल सप्तमी/अष्टमी 11 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल नवमी 12 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल दशमी 13 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल एकादशी 14 नवम्बर
उत्तराभाद्रपदा शुक्ल द्वादशी 15 नवम्बर	रेवती शुक्ल द्वादशी 16 नवम्बर	अश्विनी शुक्ल त्रयोदशी 17 नवम्बर	भरणी शुक्ल चतुर्दशी 18 नवम्बर	कृतिका शुक्ल पूर्णिमा 19 नवम्बर		

मार्गशीर्ष

20 नवम्बर-19 दिसम्बर 2021 — ऋतु- हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस 19 दिसम्बर					रोहिणी कृष्ण प्रतिपदा 20 नवम्बर	रोहिणी कृष्ण द्वितीया 21 नवम्बर
मृगशिरा कृष्ण तृतीया 22 नवम्बर	आर्द्रा कृष्ण चतुर्थी 23 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण पंचमी 24 नवम्बर	पुष्य कृष्ण षष्ठी 25 नवम्बर	आश्लेषा कृष्ण सप्तमी 26 नवम्बर	मघा कृष्ण अष्टमी 27 नवम्बर	पू० फाल्गुनी कृष्ण नवमी 28 नवम्बर
उ० फाल्गुनी कृष्ण दशमी 29 नवम्बर	हस्त कृष्ण एकादशी 30 नवम्बर	चित्रा कृष्ण द्वादशी 1 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण त्रयोदशी 2 दिसम्बर	विशाखा कृष्ण चतुर्दशी 3 दिसम्बर	अनुराधा कृष्ण अमावस्या 4 दिसम्बर	ज्येष्ठा/मूल शुक्ल प्रतिपदा/द्वितीया 5 दिसम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल तृतीया 6 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 7 दिसम्बर	श्रवण शुक्ल पंचमी 8 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल षष्ठी 9 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल सप्तमी 10 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल अष्टमी 11 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल नवमी 12 दिसम्बर
रेवती शुक्ल दशमी 13 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल एकादशी 14 दिसम्बर	भरणी शुक्ल द्वादशी 15 दिसम्बर	भरणी शुक्ल त्रयोदशी 16 दिसम्बर	कृतिका शुक्ल चतुर्दशी 17 दिसम्बर	रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 18 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल पूर्णिमा 19 दिसम्बर

सहज सरल सांख्य-१६

- आचार्य सतीश, दिल्ली

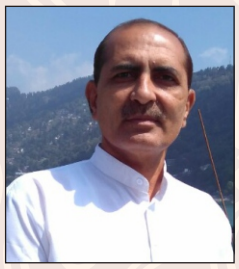

सुखी होने का एक मार्ग सूत्रकार ने दिया है-

जैसे प्राचीनकाल में पिङ्गला नामक वेश्या अपने प्रणयी की प्रतीक्षा में रात-रातभर इस प्रतीक्षा में बैठी रहती कि अब आया और अब आया। वह इससे अत्यन्त दु:ख का अनुभव करती। कई बार ऐसा होने पर उसके मन में भाव उत्पन्न हुआ कि आशा ही इस दु:ख का कारण है तो वह उस कार्य से विरत हो गई और उस आशा को ही त्यागकर सुख को प्राप्त हो गई।

वैसे ही आशाओं को छोड़कर संतोष और धैर्य के साथ रहने वाला व्यक्ति ही सुखी रहता है। योगी को आशाओं का सदा परित्याग करना चाहिए।

परिग्रह से बचने का निर्देश देते हुए सांख्यकार कहता है कि जैसे सांप अपने लिए घर नहीं बनाता है, यहाँ वहाँ घूमता रहता है। परनिर्मित स्थान में ही अपना नियत समय बिता देता है। ऐसे ही विवेकी पुरुष घर आदि साधन जुटाने की चिन्ता से रहित होता है, घर के ममत्व से भी विमुक्त रहता है।

जिस प्रकार भ्रमर जहाँ तहाँ घूमता हुआ सारभूत रस ले लेता है और अनुपयोगी भाग छोड़ देता है। विवेकी उसी प्रकार अनेक शास्त्रों का अध्ययन व गुरुओं से सत्संग प्राप्ति पर भी सार का ग्रहण विवेक के दृढ़तार्थ करे।

जिस प्रकार बाण चलाने वाला एकाग्रचित होकर अपने लक्ष्य पर बाण चला पाता है उसी प्रकार एकाग्रचित रहने पर समाधि में कोई बाधा या हानि नहीं होती। एकाग्रचित व्यक्ति को अपने आसपास की अन्य बातों का ध्यान ही नहीं होता है।

जैसे लोक में जिस कार्य के लिए जो नियम हैं उनका पालन न करने से किया हुआ पुरुषार्थ सफलता प्राप्त नहीं करता है ऐसे विवेकी जन के लिए निश्चित व्रत-नियमों का उल्लघंन कर देने से आत्म-जिज्ञासु के ज्ञान सम्पादन के लिए किए गए सब प्रयत्न निष्फल हो जाते है।

तत्वज्ञान के लिए अपेक्षित व्रत नियम आदि के विस्मृत हो जाने पर भी आत्मज्ञान के लिए किए जाने वाले प्रयत्न विफल हो जाते हैं और मनुष्य दु:ख को प्राप्त होता है।

क्या उपदेश सुनने मात्र से पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है?

उपदेश के केवल सुनने मात्र से पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती। श्रवण के पश्चात् मन और निदिध्यासन भी करना पड़ता है अन्यथा विरोचन की भांति होगा। उपनिषद की कथानुसार इन्द्र व विरोचन ने प्रजापति के पास आत्मोपदेश का श्रवण किया। विरोचन ने श्रवण के पश्चात् मनन निदिध्यासन नहीं किया, अत: वह कृतकृत्यता प्राप्त नहीं कर सका। इन्द्र को विवेक ज्ञान प्राप्त हुआ क्योंकि ऐसा देखने में आता है। उसने श्रवण के पश्चात् उस पर मनन निदिध्यासन अर्थात् चिन्तन-मनन, विचार विमर्श किया।

इन्द्र की तरह गुरुश्रद्धा के साथ, इन्द्रिय संयम का पालन करते हुए, गुरु के समीप रहकर अध्यात्म शास्त्रों का अध्ययन करते हुए बहुत काल में आत्मज्ञान की प्राप्ति हो पाती है

विवेक सिद्धि में काल नियम नहीं है अर्थात् इतने समय में विवेक की प्राप्ति होगी यह कोई निश्चित नहीं। जैसे पूर्व जन्म में किए गए साधनानुष्ठान से वामदेव ऋषि को शीघ्र इसी जन्म से विवेक सिद्धि हो गई। शास्त्र या गुरोपदेश से प्राप्त शाब्दिक ज्ञान के अनन्तर समाधि अनुष्ठान से धीरे-धीरे आत्मसाक्षात्कार होता है, यज्ञ उपासकों की लोक सिद्धि की तरह।

पञ्चाग्नि योग से उत्कृष्ठ लोक प्राप्ति में भी कर्मों के बने रहने से जन्म रूप में वापसी बनी रहेगी जैसा श्रुति भी प्रतिपादित करती है। अत: यज्ञानुष्ठान विवेक साधन नहीं है।

जैसे हंस जल मिश्रित दूध में से दूध का ग्रहण और जल का त्याग कर देता है ऐसे ही विरक्त छोड़ने योग्य अर्थात् लोक का त्याग और ग्रहण करने योग्य अर्थात् मुक्ति को प्राप्त करता है।

हंस के समान विरक्त ही में विवेचनीय अर्थात् पृथक-पृथक वस्तुज्ञान के त्याज्य और ग्राह्य के पृथक्-पृथक् करने की उच्च योग्यता प्राप्त होती है।

क्या विरक्त को रागी का संसरण करना चाहिए?

आत्म जिज्ञासु को अविरक्त लोगों में सामान्यतय नहीं जाना चाहिए अन्यथा वह भी दाने के लोभ में पिंजरे में फंस जाता है। वह भी उसी तोते की तरह उनके गुणों के सम्पर्क से उसी में फंस जाता है, जैसे तोता दाने आदि के लोभ में फंस जाता है। अत: विरक्त को पूर्व निर्देश के अनुसार एकान्तवास ही प्रिय होना चाहिए।

सौमरि नामक एक मुनि की मृत्यु काल तक भी भोग-भोगने से शान्ति न हुई। मृत्यु के समय कहा भी था कि मृत्यु तक मनोरथों में लगा हुआ है। उसमें ज्ञान का उदय नहीं होता । अत: भोग को त्यागकर ही शान्ति प्राप्त होती है। भोग और भोग पदार्थों के दोषों को देखने से ही वैराग्य प्राप्त होता है, उनकी अनदेखी करने से नहीं।

भार्या अर्थात् पत्नी से अत्यधिक आसक्ति होने के कारण पत्नी की मृत्यु के उपरान्त अज नामक राजा को वशिष्ठ मुनि के उपदेश से उसे शान्ति प्राप्त नहीं हुई। राग से चित्त मलीनता को प्राप्त होता है और मलिन चित्त में उपदेश से विवेकरूपी अंकुर का प्रादुर्भाव नहीं होता।

जैसे मलिन दर्पण में प्रतिबिम्ब का आभास भी नहीं होता वैसे राग-द्वेष व अन्य विषयों का संचार रहने के कारण मलिन चित्त में आत्मज्ञान का उदय नहीं होता।

तो क्या प्रवृत्ति के सहयोग से प्राप्त मोक्ष भी प्रकृति जैसा ही होगा?

जैसे कीचड़ में उत्पन्न कमल कीचड़ के रूप का नहीं होता वैसे प्रकृति के सहयोग से उत्पन्न हुआ मोक्ष प्रकृति जैसा नहीं होता।

विभूतियों अर्थात् अजिमादि सिद्धियों के द्वारा अधिकाधिक ऐश्वर्य लाभ होने पर भी पूर्ण पुरुषार्थ की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि जैसा उपास्य होगा वैसी ही उपासक को सिद्धि प्राप्त होगी।

क्रमश ....

प्राचीन भारत में नारीवाद-४

-सोनू आर्य, हरसौला

अत: प्राचीन भारत में नारी को हर वह अधिकार प्राप्त थे जो पुरुषों को प्राप्त थे। इनमें शिक्षा, समानता, सम्मान, वैवाहिक स्वतंत्रता, पैतृक संपत्ति में भागीदारी, बाल विवाह, दहेज एवं अवांछित तलाक से उन्मुक्ति आदि से लेकर पुनर्विवाह, नियोग आदि अधिकार स्पष्ट हैं। वैदिक मंत्रद्रष्टा ऋषिकाओ एवं शस्त्रकला में निपुण अनेक नारियों के पूर्व दृष्टांतों से यह स्पष्ट भी है। किंतु मध्यकाल तक आते-आते शिक्षा के ठेकेदारों द्वारा मनुस्मृति और अन्य ग्रंथों में प्रक्षिप्त किए गए स्त्री विरोधी श्लोकों और मध्यकालीन भारतीय विचारकों की स्त्री विरोधी उक्तियों के कारण हिंदू समाज में नारी की पूर्व गरिमामयी स्थिति का अन्त हुआ जिसकी पूर्ण इतिश्री विदेशी आक्रमणकारियों के आक्रमणों से हुई। प्राचीन भारत में मर्यादित युद्धों का समाज पर प्रभाव नगण्य रहता था। विजित राजा द्वारा पराजित राज्य की प्रजा पर किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं किया जाता था। राष्ट्रकवि मैथिली शरण के शब्दों में 'प्रतिपक्षियों' को भी हमारे सत्य का विश्वास था लेकिन मध्य काल में विदेशी आक्रमणों के पश्चात भारतीय राजाओं के पराजित होने के बाद विदेशी लुटेरों द्वारा भारतीय संपत्ति के साथ-साथ नारी अस्मिता को भी लूटा जाने लगा। अत: युद्ध की हार उपरांत होने वाले स्त्री अस्मिता से खिलवाड़ से बचने के लिए भारतीय नारी जाति ने जौहर जैसी प्रथा को स्वीकार करना उचित समझा जो धीरे-धीरे सती प्रथा का रुपधारण कर गई। मुस्लिम शासन में हिंदू प्रजा द्वारा महिलाओं की सुरक्षा के लिए शासकों की देखा देखी पर्दा जैसी प्रथा को अपना लिया गया। प्राचीन भारतीय इतिहास से विदित होता है कि एकमात्र माद्री को छोड़कर कोई भी स्त्री पति संग चिता में नहीं बैठी। यदि भारत में सती प्रथा रही होती तो भारतीय महाकाव्यों में इसके अनेक उदाहरण प्राप्त होते। वास्तविकता यह है कि प्राचीन भारत में ऋषि-ऋषिकाएं जब आभास करते कि उनका देहधारण का उद्देश्य पूर्ण हुआ तो वह योगबल से प्राणांत कर लेते थे। माद्री ने पांडु की मृत्यु का कारण होने से आत्मग्लानि बोध स्वरुपयोगबल से प्राणांत किया था। दूसरी ओर कुंती ने वैसा नहीं किया। यदि माद्री सती हुई तो कुंती सती क्यों न हुई। अत: इस प्रकरण को प्राचीन भारतीय अध्यात्म आदि के संदर्भ में ही देखा जाना चाहिए न कि सती प्रथा के संदर्भ मे। डॉक्टर अंबेडकर के द्वारा शूद्र एवं स्त्री की दुर्दशा के लिए मनुस्मृति को जिम्मेदार ठहराया गया है। क्योंकि उनके समय तक भारतीय ग्रंथों के संशोधन का कार्य हुआ भी नहीं था। यह सर्वमान्य सत्य है कि न केवल मनुस्मृति अपितु लगभग सभी प्राचीन भारतीय ग्रंथों में समय-समय पर प्रक्षेप होते रहे हैं। विभिन्न ग्रंथों की बाद वाली प्रतियों में पाए जाने वाले अधिक श्लोकों से यह बात स्पष्ट भी है। महान इतिहासकार अर्नाल्ड जे. टायनबी के अनुसार 'विश्व के इतिहास में अगर किसी देश के इतिहास के साथ सर्वाधिक छेड़छाड़ की गई है, तो वह भारत का इतिहास ही है।' यही मत अन्य अनेक विद्वानों द्वारा व्यक्त किया गया है। मनुस्मृति की अन्त:साक्षी प्रक्षिप्तता को स्पष्ट करती है। मनु वेदों को स्वत प्रमाण मानते थे अत: जो वेदानुकूल नहीं वह स्वत: ही मनुपरोक्त भी नहीं है। अत: नारीवादी मान्यता न केवल मनु अपितु वेद वेदांग महाकाव्यों तथा मनु के बाद कौटिल्य एवं दयानंद आदि की भी हैं। क्योंकि इन्होंने भी वैदिक परंपरा का ही निर्वहन किया है। यदि मनुस्मृति में वेद, भारतीय विचारकों तथा स्वयं मनु की मान्यताओं से उलट नारी विरोधी कुछ श्लोक पाए जाते हैं तो वह स्वत: ही प्रक्षिप्त सिद्ध होते हैं। क्योंकि अति साधारण लेखक भी अपनी कृति में परस्पर विरोधी बातें नहीं लिख सकता। **'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमते तत्र देवता:'** कहकर नारी जाति को सम्मान देने वाले महर्षि मनु को शुद्र एवं नारी की दुर्दशा के लिए जिम्मेदार मानने वाले महानुभाव उपरोक्त तर्क पर विचार करें। किंतु मध्यकालीन नारी दुर्दशा भारतीय इतिहास की कटु वास्तविकता है। नारी शोषण की उस व्यवस्था को ध्वस्त करना आधुनिक काल में अनिवार्य था। डॉक्टर अंबेडकर एवं अन्य आलोचकों दवारा की गई आलोचना नारीवाद हेतु संजीवनी ही सिद्ध हुई है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है भारत में वेद से लेकर महाकाव्य तक बौद्ध काल से आधुनिक काल तक नारी गरिमा के विचार के रुप में नारीवाद विद्यमान रहा है। नारी जाति के आधुनिक उन्नायकों राजा राममोहन राय, महर्षि दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले एवं सावित्रीबाई फुले तथा डॉ आंबेडकर आदि द्वारा नारी गरिमा हेतु किए गए अथक संघर्ष एवं प्रयासों से नारी जाति को प्राचीनकाल की भांति आधुनिक काल मुख्यत: स्वतंत्र भारत में समय-समय पर अनेक अधिकार प्राप्त हुए जिसके परिणाम स्वरुप भारतीय नारियों ने साधारण क्षेत्रों से लेकर राजनीति, व्यापार, सैन्य, तकनीकी आदि जटिल क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया एवं नित नए कीर्तिमान भारतीय नारियों द्वारा स्थापित किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट- **www.aryanirmatrisabha.com** पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक- **www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका** पर जाएं।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	04 नवम्बर	दिन-गुरुवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-चित्रा/स्वाती
पूर्णिमा	19 नवम्बर	दिन-शुक्रवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-कृतिका
अमावस्या	04 दिसम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-अनुराधा
पूर्णिमा	19 दिसम्बर	दिन-रविवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-मृगशिरा

आर्योद्देश्यरत्नमाला

प्रणेता - ऋषि दयानन्द
व्याख्याता - आचार्य परमदेव मीमांसक

५१. प्रारब्ध-जो पूर्व किये हुए कर्मों का सुख-दु:ख रूप फल भोग किया जाता है, उसको **प्रारब्ध** कहते हैं।

व्याख्या-जो पूर्वजन्म वा उससे भी पूर्व किये हुए कर्म हैं, उन कर्मों के आधार से यह वर्तमान शरीर आदि मिलते हैं और इनसे सुख वा दु:ख रूप फल भोगे जाते हैं, उस कर्म को प्रारब्ध कहते हैं, प्रारब्ध को भोगना ही पड़ता है, क्षमा नहीं होता है; यही **प्रारब्ध** भाग्य कहाता है।

५२. अनादि पदार्थ-जो ईश्वर, जीव और जगत् का कारण है, ये तीन पदार्थ स्वरूप से **अनादि** हैं।

व्याख्या-अनादि पदार्थ तीन हैं-एक ईश्वर, दूसरा जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण, इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं। (सत्यार्थप्रकाश-स्वम० प्रकाश)

ईश्वर, जीव, प्रकृति (सत्त्व, रज, तमोगुण रूप) ये तीन नित्य पदार्थ हैं अर्थात् न इनका आदि है और न इनका अन्त होगा। ये स्वरूप से ही अनादि और बिना अन्त वाले हैं, इनके गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य रहने वाले हैं। जीव के नैमित्तिक गुण, कर्म, स्वभाव भी होते हैं, परन्तु ईश्वर के कदापि नहीं।

५३. प्रवाह से अनादि पदार्थ-जो कार्यजगत्, जीव के कर्म और जो इनका संयोग-वियोग है, ये तीन परम्परा से अनादि हैं।

व्याख्या-**जो संयोग से द्रव्य, गुण, कर्म उत्पन्न होते हैं वे वियोग के पश्चात् नहीं रहते परन्तु जिससे प्रथम संयोग होता है वह सामर्थ्य उनमें अनादि है और उससे पुनरपि संयोग तथा वियोग भी, इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूँ।**

(सत्यार्थप्रकाश-स्वम०प्रकाश)

सत्त्व, रज, तमोगुण रूप प्रकृति से परमेश्वर सृष्टि बनाता है, जीवों के लिये शरीर का भी निर्माण करता है। किस आधार पर? जीवों के कर्म के आधार पर अर्थात् कर्मफल को प्रदान करने हेतु। सृष्टि हुई है तो प्रलय भी होगा, अत: जीवों के कर्म के लिये प्रकृति के मूल तत्त्वों का संयोग हुआ है तो वियोग भी होगा, इसी तरह जीव का भी प्रकृति से (शरीररूप में) संयोग हुआ है तो वियोग भी होगा। अत: प्रकृति और जीव में संयोग का सामर्थ्य अनादि से है इसलिये संयोग होता रहेगा और वियोग भी होता रहेगा, सृष्टि फिर प्रलय पुन: सृष्टि --------; यह प्रवाह से अनादि है। जीव के कर्म भी प्रवाह से अनादि हैं; क्योंकि संयोग का सामर्थ्य जीव में अनादि है, जीव का प्रकृति से संयोग हुआ, शरीर की उत्पत्ति हुई और फिर कर्म की निरन्तरता, अत: यह भी प्रवाह से अनादि है। यह संयोग-वियोग भी निरन्तर होता रहेगा, सृष्टि-प्रलय, जन्म-मरण, शरीर ग्रहण से कर्म की निरन्तरता, यह लगातार-अनवरत चलता रहेगा, कब इसका प्रारम्भ हुआ, कब अन्त होगा, यह नहीं कहा जा सकता है। इसलिये ईश्वर, जीव, प्रकृति स्वरूप से अनादि; सृष्टि, जीव के कर्म और इनका संयोग-वियोग (संयोग-वियोग रूपी सामर्थ्य की विद्यमानता) **प्रवाह से अनादि** हैं।

५४. अनादि का स्वरूप-जो न कभी उत्पन्न हुआ हो, जिसका कारण कोई भी न हो, जो सदा से स्वयं सिद्ध होके सदा वर्तमान रहे, वह **'अनादि'** कहाता है।

व्याख्या-जिस का आदि कभी न हो अर्थात् जिसकी उत्पत्ति कभी भी न हुई हो, जो सदा से स्वयं सिद्ध रहते हुए हमेशा वर्तमान रहता है अनादि कहाता है। जैसे-घड़े की उत्पत्ति का कारण मिट्टी, कुम्हार, चाक आदि हैं, इस प्रकार से अनादि पदार्थ की उत्पत्ति का कारण कभी नहीं होता है, ये सदा से स्वयं सिद्ध रहते हैं।

५५. पुरुषार्थ-अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर, वाणी और धन से जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसको **'पुरुषार्थ'** कहते हैं।

५६. पुरुषार्थ के भेद-जो अप्राप्त वस्तु की इच्छा करनी, प्राप्त का अच्छी प्रकार रक्षण करना, रक्षित को बढ़ाना, और बढ़े हुए पदार्थों का सत्यविद्या की उन्नति में तथा सब के हित करने में खर्च करना है, इन चार प्रकार के कर्मों को **'पुरुषार्थ'** कहते हैं।

संयुक्त व्याख्या-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष पुरुष का अभीष्ट है, उद्देश्य है, प्रयोजन है। इनकी प्राप्ति हेतु उत्तम व्यवहार (स्वभाव, कर्म, स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि) की प्राप्ति के लिए मन, शरीर, वाणी और धन से जो अत्यन्त प्रयत्न करना है, पुरुषार्थ कहलाता है। मन से विचार-संकल्प, शरीर से अथक प्रयत्न, वाणी से दूसरों से सहाय्य लेने-प्रेरित का उद्योग और धन से संसाधन एकत्रित कर अभीष्ट को सर्वथा, सर्वदा आलस्य रहित होकर प्राप्त करना होता है। जो अप्राप्त है, उसकी इच्छा; जितना प्राप्त है, उस की रक्षा करना और बढ़ाना; बढ़े हुए पदार्थों का सत्यविद्या-वेदविद्या की उन्नति में तथा सब के हित में लगाना होता है। जैसे-जो विद्या नहीं आती है, उसको विद्वानों के चरणों में बैठकर प्राप्त करने की इच्छा करना, प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना, जितना मिलता जाय और जो पूर्व से विद्या पास में हो उसकी रक्षा करते जाना अन्यथा पूर्व-पूर्व प्राप्त विद्या लुप्त हो जायेगी। अत: नवीन विद्या का ग्रहण, मनन और चिन्तन करना, विद्या की वृद्धि तथा प्रभूत विद्या से पारोवर्य्यवित् हो वेदविद्या का अर्थप्रकाश, उस से आविष्कार, उसका प्रचार-प्रसार करना होता है। प्रभूत विद्या से प्राणिमात्र का हित करना होता है अहित कदापि नहीं, यही **पुरुषार्थ** है।

५७. परोपकार-अर्थात् अपने सब सामर्थ्य से दूसरे प्राणियों के सुख होने के लिए जो तन, मन, धन से प्रयत्न करना है; वह **परोपकार** कहाता है।

क्रमश ....

संध्या काल

कार्तिक-मास, हेमन्त-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(21 अक्टूबर 2021 से 19 नवम्बर 2021)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

मार्गशीष-मास, हेमन्त-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(20 नवम्बर 2021 से 19 दिसम्बर 2021)
प्रात: काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00P.M.)

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

हम इस वेद ज्ञान को 1979 से लेकिन उसके बाद से यहां कोई ऐसा सत्र चलाया नहीं गया। इसलिए हमारा पूरा मत है कि हमारी वेद से ही आगे आने वाली पीढ़ी का विकास होगा। इसमें हमारा संकल्प है आगे की युवा पीढ़ी को ज्यादा से ज्यादा जोड़ने को लिए प्रयत्न करते रहेंगे।

नाम : उमाशंकर, आयु : ६० वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : मजदूरी कृषि, पता : रठेह, किशनी, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश।

सत्र का अनुभव बहुत ही उत्तम रहा, मैंने इस सत्र को 02 अक्टूबर 2021 से 03 अक्टूबर 2021 तक जॉइन किया। मैंने इस सत्र में जाना ईश्वर के बारे में कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। मैंने समझा कि आत्मा क्या है? आत्मा एक चेतनस्वरूप है। मैंने जाना कि आर्य का क्या धर्म है और उसको किस नियमों के अनुसार कार्य करना है? ताकि कोई अधर्म न हो पाये। हमें भूत-प्रेत के आडम्बरों में नहीं फंसना व कैसे हम बच सकते है। हमें किसी भी प्रकार के व्यसनों में नहीं फंसना है। जैसे - मदिरा, जुआ, गांजा, तम्बाकू आदि। हम यह समझे कि राष्ट्र क्या है? इसकी कैसे सुरक्षा की जायेगी आदि।

नाम : अतुल कुमार, आयु : ३४ वर्ष, योग्यता : बी.कॉम, कार्य : अकाउंटेंट, पता : ढाकी साधौ, बिजनौर, उत्तर प्रदेश।

अब तक के अनुभव में सबसे उत्तम और विशेष जानकारी प्राप्त हुई। हमारे अन्दर चल रहे अंतर्द्वंद की भारत की यह अवनती क्यों हो रही है। आखिर क्यों (हिन्दू) समाज आज ढ़ोंग, पाखण्ड आडम्बर में फंस चुका है। यह समझ हमें कुछ हद तक प्राप्त हुआ। बाकी बहुत ही अच्छा अनुभव रहा हमारे लिए यह अपने जीवन का।

मैं अपनी क्षमता व सामर्थ्य अनुसार समाज को संगठित व जागरुक करने के लिए आर्यसमाज की विचारधारा से प्रेरित जानकारी का प्रचार-प्रसार करता रहुंगा।

नाम : बालकृष्ण, आयु : २६ वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : पत्रकार, पता : राहम, टण्डवा, झारखण्ड

आर्य समाज की दो दिन की शिक्षा से मैं प्रभावित हुआ हूँ। मुझे आर्य समाज में पूर्ण विश्वास हुआ है। मुझे आर्य समाज की नीतियाँ मुझे अच्छी लगी और मैं आर्य समाज को आगे बढ़ाने का कार्य करुँगा।

श्री रमेश चन्द्र सक्सेना और श्री रघुनाथ लौनिया जी के जरिये हमे इस दो दिवस आर्य धर्म में आने का मौका मिला

नाम : निर्मल चौहान, आयु : २९ वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्य : छात्र, पता : रठेह, किशनी, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश।

श्रीमान जी सत्र के द्वारा जो हम देवी-देवताओं की पूजा-पाठ कर भ्रमित थे। इस सत्र में बैठकर हमें ज्ञात हुआ कि जाति-पाति, छूआ-छूत, ऊँच-नीच से ऊठकर वेदशास्त्र के द्वारा आर्य बनने के लिए, उनके नियमों के पालन करना तथा आर्य बनाने के लिए सभी को गले लगाकर भ्रातृ-भावनाएँ पैदा कर उन्हें प्रेम से आर्य बनायें व नियमों का पालन करें।

नाम : रवि सिंह, आयु : ३१ वर्ष, योग्यता : १२वीं, पता : किशनी, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश।

मुझे दो दिन के सत्र से बहुत अनुभव मिला, मैंने भारत के सभी तीर्थ स्थानों पर घूमकर देख लिया। मुझे कुछ नहीं मिला, सब जगह खाने-कमाने की क्रिया बना रखी है इसी कारण आज में आर्य बनना चाहता हूँ।

नाम : आशु कुमार, आयु : २८ वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : कृषि, पता : स्वाहेड़ी, बिजनौर, उत्तर प्रदेश।

हम लोग पहले के वैदिक सिद्धान्त को भूल गये हैं और हमारा राष्ट्र गुलामी की जंजीर में जकड़े जा रहा हैं लेकिन दो दिन के सत्र में मुझे अनुभव हुआ कि अब हम लोग को जागना होगा और सब मनुष्यों को जात-पात खत्म करके सभी को आर्य का संगठन बनाना है। और राष्ट्र को बचाना है। और वैदिक राष्ट्र बनाना है।

नाम : धर्मेन्द्र, आयु : ५१ वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्य : व्यवसाय, पता : किशनपुर, चतरा

मैं कौन हूँ, यहाँ क्यों आया? क्या करना है? क्या करुँ इसका क्या मोल है? कुछ पता नहीं था परन्तु जब से मैं श्री सतेन्द्र जी के सम्पर्क से सत्र में आया हूँ सब पता चल गया। अन्धकार से सिर्फ 2 दिन में ही प्रकाश की किरण देख व ज्ञान की आशा देख मैं धन्य हो गया। मेरे को यहाँ आकर अभी तक का सबसे अच्छा व स्वाभिमान अहसास हुआ। मैं और मेरी आत्मा का इतना अच्छा अनुभव है कि अब मैं आपको बता नहीं सकता। बस अब ज्ञान पाकर मेरे को अपनी मातृभूमि को सम्पूर्ण आर्यावर्त बनाने की इच्छा उत्पन्न हुई है। अतः अब ओ३म परमपिता परमेश्वर जी के आशीर्वाद से मैं इस क्षेत्र में पुरुषार्थ करुँगा।

नाम : राहुल आर्य, आयु : २१ वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : छात्र, पता : शेरकोट, बिजनौर, उत्तर प्रदेश

मुझे सत्र में अपनी नास्तिकता को समाप्त करने का अवसर मिला। पहले मैं सन्देह में था कि ईश्वर है या नहीं? लेकिन सत्र के बाद मैं अपने सन्देह को दूर कर पाया। मैं जान पाया कि धर्म क्या है? हमें जीवन में किसका अनुसरण करना है? यह ज्ञान हुआ। मैं वेदों के महत्व को ज्ञान गया।

नाम : राजा, आयु : २० वर्ष, योग्यता : १२, कार्य : छात्र, पता : टन्ढेडा मु.नगर, उत्तर प्रदेश

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।